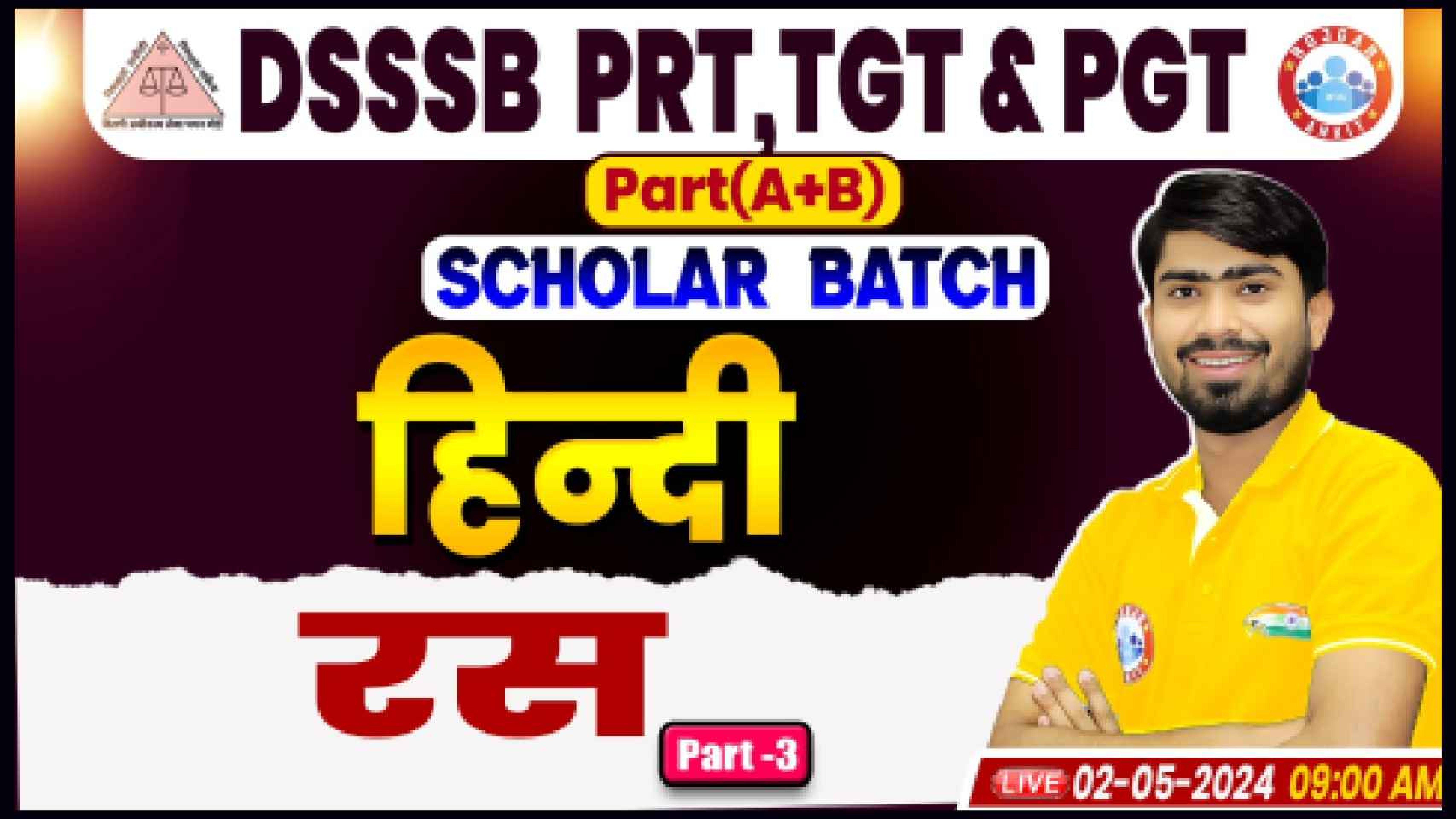
DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
रस
Part -3
LIVE 02-05-2024 09:00 AM

③- करुण रस ⇒ किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के नाश या नष्ट होने से हृदय में जो शोक का भाव उत्पन्न होता है। वहाँ करुण रस होता है।

स्थायी भाव - शोक (दुःख)

3. करुण रस

- अभी तो मुकुट बधाँ था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल खिले थे शून्य कपोल,
हाय रूक गया यही संसार, बिना सिंदूर अनल अंगार।।
- सोक विकल एब रोवहि रानी, रुप सीलु बल तेज बखानी,
करहिं विलाप अनेक प्रकार परहि भूमिलत बारहि बार।।
- दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं
कहीं।।

- मेरे हृदय के हर्ष हा अभिमन्यु अब तू है कहां,
दृग खोलकर बेटा तनिक तो देख हम सबको यहाँ,
मामा खड़े है पास तेरे तू यही पर है पड़ा
निज गुरुजनों के मान का तो ध्यान था तुझको बड़ा,
व्याकुल तनिक भी देखकर तू धैर्य देता था मुझे,
पर आज मेरे पुत्र प्यारे हो गया है क्या तुझे,
धात्री सुभद्रा को समझकर माँ मुझे था मानता,
पर आज तू ऐसा हुआ मानो न था पहचानता।

④-वीर रस ⇒ शत्रु की उन्नति, दीनों पर अत्याचार या धर्म की दुर्गति को मिटाने जैसे किसी विकट या दुष्कर कार्य को करने का जो उत्साह मन में उमड़ता है वहाँ वीर रस होता है।

स्थायी भाव - उत्साह

4. वीर रस

[redacted]

- वीर तुम बड़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो,
तुम कभी रुको नहीं तुम कभी झुको नहीं।।

- हे सारथे! है द्रोण क्या, देवेन्द्र भी आकर अड़े,
  है खेल क्षत्रिय बालकों का व्यूह–भेदन कर लड़े,
  मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे,
  यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानों मुझे,
  है ओर की तो बात क्या गर्व में करता नहीं,
  मामा तथा निज तात से भी युद्ध में डरता नहीं।।
- चढ़ चेतक पर तलवार उठा करता था भूतल पानी को,
  राणा प्रताप सर काट–काट करता था सफल जवानी को।।

5- रौद्र रस ⇒ विरोधी पक्ष द्वारा किसी व्यक्ति, देश, समाज या धर्म का अपमान करने से उसकी प्रतिक्रिया में जो क्रोध उत्पन्न होता है। वहाँ रौद्र रस होता है।

5. रौद्र रस

- कहा कैकयी ने सक्रोध, दूर हो अरे निर्बोध।।
- श्री कृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे,
  सब शील अपना भूलकर करतल–युगल मलने लगे,
  संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े,
  करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठकर खड़े,
  उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा,
  मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।।
- माखे लखन कुटिल भयी भौहें,
  क्रोध रद–पट फरकत नयन रिसौहें।।

⑥- भयानक रस ⇒ भय से पूर्ण वस्तु, घटना देखने या सुनने से हृदय में जो भय का भाव उत्पन्न होता है। वहाँ भयानक रस होता है।

स्थायी भाव - भय (डर)

6. भयानक रस

- एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय,
  विकल बटोहि बीच ही परयो मूर्छा खाय।।
- उधर गरजी सिंधु लहरियाँ, कुठिल काल के जालो सी
  चली आ रही फेन उगलती, फन फैलाए ब्यालों सी।।
- नभ ते झटपट बाज लखि, मूल्यो सकल प्रपंच,
  कंपित तन व्याकुल नयन लावक हिल्यौ न रंच।।

⑦- वीभत्स रस => घृणा का भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होकर अस्वाद्य हो जाता है तब वहाँ वीभत्स रस होता है

स्थायी भाव - जुगुप्सा

7. वीभत्स रस

- सिर पर बैठ्यों काग आँख दोउ खात निकारत,
खीचत जीभहिं स्यार अतिहि आनन्द उर धारत,
गीध जाँघ को खोदि–खोदि कै मांस उपारत,
श्वान अंगुरिन काटि–काटि कै खात विदारत।।
- रक्त–मांस के सड़े पंक से उमड़ रही है,
महाघोर दुर्गन्ध, रूद्ध हो उठती श्वासा।।
- जहं–तह मज्जा मांस रूचिर लखि परत बगारे,
जित–जित छिटके हाड़ सेत कहुँ–कहुँ रतनारे।।

(8)- अद्भुत रस => अलौकिक, आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर सहसा विश्वास नहीं होता और मन में स्थायी भाव विस्मय उत्पन्न होता है। वहाँ अद्भुत रस होता है।

8. अद्‌भुत रस–

- अम्बर में कुन्तल जाल देख, पद के नीचे पाताल देख,
मुट्ठी में तीनों काल देख, मेरा स्वरूप विकराल देख।।

- बरसै कंबल भीजै पानी, कबीरदास की उल्टी वाणी।।

- देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया,
क्षण भर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया।।

- एक अचम्भा देख रे भाई, ठाड़ा सिंह चरावै गाई।
  पहले पूत पीछे भई माई, चेला के गुरु लगै पाई।।
- बिनु पग चले सुने बिनु काना,
  कर बिनु करम करे विधि नाना,
  आनन रहित सकल रस भोगी,
  बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

(9)- शान्त रस => सांसारिक विषयभोगों की असारता तथा परमात्मा के ज्ञान से उत्पन्न निर्वेद ही पुष्ट होकर शान्त रस में परिणत होता है।

9. शान्त रस–

- तपस्वी! क्यों इतने हो क्लान्त, वेदना का यह कैसा वेग?
आह! तुम कितने अधिक हताश, बताओं यह कैसा उद्वेग।
- मन रे तन कागद का पुतला,
लागै बूदँ विनसि जाय छिन में गरब करै क्यो इतना।।
- अब लौ नसानी अब न नसैहों।

(10)- वात्सल्य रस => छोटे बालक-बालिकाओं के प्रति प्रेम तथा सगे सम्बन्धियों के प्रति प्रेम के भाव से है।

स्थायी भाव - स्नेह

10. वात्सल्य रस–

- यशोदा हरि पालने झुलावै
  हलरावै दुलरावै जोई–सोई कछु गावै।।
- किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत
  मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत।।

(ii)- भक्ति रस => ईश्वर के प्रति प्रेम के भाव से है।

स्थायी भाव- अनुराग

11. भक्ति रस–

- मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई,
साधुन संग बैठि बैठि लोक–लाज खोई
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई।।